• कहानी माला 12

अन्ताक्षरी

• लायब्रेरी वाली लड़की

लायब्रेरी वाली लड़की

● लेखिका — विश्वप्रिया आयंगर
● अंग्रेजी से अनुवाद — हेमंत

रोज़ अपने घाघरे की उधड़ी सीवन को पैर से झटकती, वह कदम-कदम पर मोड़ों वाली तंग गलियों से गुज़रकर दौड़ती हुई वहाँ पहुँच जाती है। जल्दी, इससे पहले कि उलझी हुई लटें चेहरे पर आकर उसकी आँखों को बंद कर दें।

बस्ती में लाइब्रेरी बहुत बेमेल जगह पर खोली गई थी। बस्ती सदियों पुरानी थी, यहाँ एक मशहूर संत कवि का मकबरा भी था, जिससे यहाँ की ऐतिहासिकता का सबूत मिलता था।

असद बाबा ने भट्टी से टीन की तश्तरी निकाली। ताज़ा बिस्कुटों की सौंधी महक खुली सड़क पर फूट पड़ी। 'वालेकुम, बाबा'। जवाब में बाबा ने सिर हिलाया, लेकिन, बिस्कुटों की ताज़ा महक भी उसे ललचा नहीं पाई और वह बिना बतियाए ही आगे बढ़ गई। भट्टी की आग और बरसों की सिकाई से काली पड़ चुकी तश्तरी — बाबा को अकेलेपन का अहसास दिला जाती है।

बस्ती के कई और लोगों की तरह ज़हीर और अली भी तलत को "लायब्रेरी वाली लड़की" कहकर बुलाया करते हैं। वे ओट में झुण्ड बनाकर तलत को लायब्रेरी में आते-जाते देखते हैं।

"जल्दी जल्दी, इससे पहले कि लायब्रेरी बंद हो जाए और मैं किताब बदलने का मौका खो दूँ...." "वालेकुम बाबा, वालेकुम बाजी, वालेकुम बकरे, वालेकुम छोटे भाई"। सीवर के गोल लोहे के ढक्कन पर एक चूहा मरा पड़ा था। बदबू का हल्का-सा भभका उठा। तलत हँस पड़ी।

''वालेकुम मरने वाले''।

अज़ीज़ा बाजी सिर्फ लायब्रेरियन ही नहीं है, तलत ने सोचा, वो समाज सेविका भी हैं। उनका होना बहुत ज़रूरी है। अज़ीज़ा बाजी की जो बात उसे सबसे ज्यादा पसंद थी वह यह कि उनके पास से पके हुए खाने की बू कभी नहीं आती। लायब्रेरी एक महल जैसी थी जिसमें ढेर-सी किताबें थीं। लायब्रेरी में लोहे की ठंडी कुर्सियों पर बैठकर किताबों के पन्ने पलटना उसे बहुत अच्छा लगता। उसका मन होता कि वो शब्दों की कतारों के बीच दौड़ती हुई चींटी बन जाए।

करीम बाबा अपनी तंग, कोठरीनुमा दुकान में छोटे-छोटे खूबसूरत लकड़ी के बक्सों में बंद, दर्जन भर सदियों पुरानी घड़ियों के बीच घिरे बैठे रहते हैं। उनमें से सिर्फ एक बेरंग घड़ी समय बताती है। घड़ी में अभी पौने छः बज रहे थे। घड़ी पर ''मेड इन इंग्लैण्ड'' लिखते समय बाबा के हाथ कंपकंपा गए थे। यदि इस घड़ी के कागज़ी डिस्क का भेद न खुले तो ये दो सौ रुपयों में बिक सकती है। ''वालेकुम बाबा'', ''वालेकुम बेटी''। उनकी फड़कती हुई कनपटियां खोपड़ी से चिपकी हुई सख्त टोपी से टकराती रहती हैं। वो रोशनी के झोंके की तरह दौड़ती जाती है। लायब्रेरी वाली छोटी-सी लड़की को अपनी किताब छाती से लगाए हुए बाबा ने उदास निगाहों से कोने में ओझल होते देखा। कुछ कलियाँ इस बस्ती में कभी खिल नहीं सकतीं। यहाँ की मिट्टी सर्द है। यहाँ धूप भी नहीं आती। अब तक वह लायब्रेरी में पहुँच चुकी होगी। बाबा अपनी दुकान बंद करके उसके दरवाज़े पर कुलुफ ताला लगाते हैं। फिर उस ताले की चमक खो चुकी तांबई चाबी को एक बार होंठों में दबाकर अपनी जेब में रखते हैं।

तलत की उम्र सोलह या सत्रह थी, ये उसे ठीक-ठीक मालूम नहीं। जब वह छोटी थी तो स्कूल जाया करती थी लेकिन एक दिन अचानक उसका स्कूल जाना बंद हो गया। शायद अब्बा और अम्मी के बीच स्कूल

की फीस को लेकर कहा-सुनी हुई थी या फिर स्कूल मास्टर से फीस के बारे में अम्मी की तकरार हुई थी।

स्कूल छूटने के दो दिन बाद ही अम्मी उसे सैर-सपाटे के वायदे के साथ रिक्शा पर बाज़ार लेकर गईं थीं। अम्मी को भड़कीला पीला रंग चाहिए था। बुर्का ओढ़े एक भुतहा औरत को पीले रंग के बारे में इतनी शिद्दत से बात करते देख दुकानदार भी एक बार तो हँस पड़ा था। लेकिन अम्मी को आखिरकार पसंदीदा रंग मिल ही गया। साथ उन्होंने चांदी के सलमा-सितारे भी खरीदे। सूरज और सितारे, गोधूलि के समय रिक्शे की घंटी की आवाज़ को सुनते और सांझ के आसमान को ताकते हुए उसने सोचा, उदासी और खुशी के मिले-जुले एहसास के साथ।

कई दिनों से तलत बेसब्री से दुआ करती रही है कि परिवार में जल्द कोई शादी हो ताकि उसे अपना नया घाघरा पहनने का मौका मिले। लेकिन अर्से से कोई ऐसा मौका आया ही नहीं।

अम्मी रात भर बैठकर तलत के लिए घाघरा-कमीज सिलती रहीं। मिट्टी के तेल की चिमनी जल-जलकर धुएँ से काली पड़ चुकी थी लेकिन अम्मी ने काम निपटा कर ही दम लिया। जब उन्होंने कमीज़ पर सलमा-सितारे टाँकने का काम शुरू किया तो सुबह होने को आ गई थी और तलत गिनतियाँ करते-करते सो चुकी थी। अब उसे देर तक सोने से भी कोई फ़र्क नहीं पड़ने वाला क्योंकि अगली सुबह उसे स्कूल तो जाना नहीं था।

एक दिन उसने अम्मी-अब्बा को बुरी तरह झगड़ते देखा। वो बहुत घबरा उठी थी। अम्मी पूछ रही थीं कि क्योंकर ताहिर की पढ़ाई के लिए पैसा है लेकिन तलत की पढ़ाई के लिए नहीं है? अब्बा पहले तो हँस पड़े और बाद में चिल्लाने लगे थे। उस वक्त वह घर के बाहर नाली के किनारे खड़ी होकर ये सब सुन रही थी। ''चाहो तो उसे रेशम, मखमल, चाँदी कुछ भी खरीद दो लेकिन बेवकूफ औरत, ताहिर से उसकी तुलना मत

करो।'' तलत को अब भी याद है अब्बा की भारी और खुरदरी आवाज़ जिसे सुनकर उसकी कंपकंपी छूट गई थी।

अम्मीजान की आँखें लाल और चेहरा आँसुओं से भरा हुआ था। लंबे फन वाली छुरी से गोश्त काटते वक्त उनके हाथ काँप रहे थे। कीमा, तलत सोचने लगी। क्या अम्मी कीमें में मटर भी डालेंगी? उसे घर में घुसते देख अम्मी चिल्लाते हुए बोली थीं ''जा अपना नया घाघरा पहन ले और बाहर जाकर खेल।'' तलत सन्नाटे में आ गई। वह तो ये पूछना चाहती थी कि कीमा कब तक बनकर तैयार होगा। घाघरा-कमीज़ पहनकर वह देर तक आइने के सामने खड़ी रही। रसोई में काम करती हुई अम्मी भी उसे दिखलाई पड़ रही थीं और उसे बराबर देखे जा रही थी। बीच-बीच में अम्मी खून से सनी अपनी लंबी मोटी उंगलियों से उसके गालों को थपथपा देती थीं। माँ बेटी की नज़रें एक दूसरे से मिलीं। तलत सहम गई। अम्मी की आँखें, चेहरे के पिंजरे

में फंसे कव्वों की तरह महसूस हो रही थीं।

तलत बाहर खेलने जा चुकी थी। चक्करदार झूले की पींग में वह भूल चुकी थी कि वह कहाँ और क्या खेली, लेकिन इस बीच उसके मखमली जोड़े पर टंके सलमे-सितारे उखड़ने लगे थे और तेल का चिकनापन लिए कुछ दाग़ उसके कपड़ों पर उभर आये थे।

जब भी वह स्कूल के बारे में सोचती तो उसके सामने चिकनाहट के धब्बों से गंदले सूट की तस्वीर सामने उभर आती।

खालों की दुकान के सामने लायब्रेरी थी। कड़ियों में करीने से सजाई गई खालें झूलती रहती थीं। ठीक बकरे के कद-बुत वाली, भूरी खालें। गर्दन और पैर सब सिले हुए। ये खालें बढ़िया मश्क के काम आती हैं। लेकिन लायब्रेरी के दरवाजे पर हमेशा पर्दा गिरा रहता है। सारी बस्ती में सिर्फ लायब्रेरी ही एक ऐसी जगह थी जिसका सामान नुमायश के लिए

नहीं था। एक पर्दा अनारकली के लहंगे-सा सुर्ख था।

तलत ने जोश पर काबू रखते हुए पर्दा हटाया। सलाम अलेकुम बाजी। एक विजेता की ख़ुशी के आलम में हैं वह। उसके बाजू किताबों से भर गए। वह लोहे की कुर्सी पर बैठ गई। लायब्रेरी में कई तस्वीरें थीं जिन्हें वह बड़े चाव से देखती है। हवाई जहाज, ट्रक और खेतों में काम करती हुई औरतों की तस्वीरें। उसके घर की दीवारें नंगी थीं। जब अम्मी की चिमनी हवा के संगीत पर झूमती तो दीवार पर कई नक्श बनने बिगड़ने लगते हैं। इनमें कुछ तस्वीरें उभरने लगती हैं। लेकिन उसे इन तस्वीरों से उभरी कहानियाँ पसंद नहीं थी।

आज उसने एक ऐसी नर्तकी की कहानी पढ़ी जिसने मौत को भी चकमा दे दिया था। नर्तकी ने मौत को उसकी परछाई के साथ नाचने की चुनौती दी थी। सूरज की तरफ मुखातिब होकर नर्तकी ने उसे सारी परछाइयों को मार देने का निवेदन करते हुए गीत सुनाया था। लेकिन सूरज कहता है "यदि मौत ही नहीं रही तो मैं किसे मारूँगा"? तब नर्तकी सूरज को अंधेरा देने को कहती है और सूरज मान जाता है। अंधेरे में अपनी परछाई खोकर नर्तकी हमेशा हमेशा के लिए नाचने लगती है। "अल्लाह-हो-अकबर" की थकी हुई सी आवाज़ सुनकर तलत की कल्पनाएँ थम गईं। लायब्रेरी की घड़ी की सुई उसे बदन में गड़ी हुई सी मालूम हुई। अब्बा का अजान से घर लौटने का वक्त हो गया था। अब उसे भी लौटना होगा। कल अज़ीज़ा बाजी उसे चीन देश के एक डाक्टर की कहानी वाली किताब देंगी जिसने वहाँ के गरीबों की खूब सेवा की थी। बाजी उसे इस डाक्टर के बारे में बहुत-सी बातें बता चुकी है। जिन लोगों ने असंभव को संभव कर दिखाया, उनकी कहानियाँ पढ़ना तलत को बहुत अच्छा लगता था। "कल तक के लिए खुदा हाफिज़।" तलत घुमावदार तंग रास्तों पर दौड़ती हुई उस अंधेरे की तरफ बढ़ रही थी जिसे घर कहते हैं।

वह नर्तकी वाली किताब को कमीज़ में दबाए हुए थी। जब लायब्रेरी वाली लड़की लौट रही थी तब सड़क की छोटी-छोटी बत्तियाँ जलने लगीं थीं। बूढ़ी आंखें, जवान आंखें, मर्दों और औरतों की ईर्ष्या और चाहत से भरी आंखें, और इन बत्तियों से बेखबर लायब्रेरी वाली लड़की अल्लाह के नाम की उठती गिरती आवाज़ के साथ एक बुझी हुई शाम की तरफ बढ़ रही थी।

त्यौहारों का महीना चल रहा था। मखमली तकिए के सहारे झुकी हुई तलत पलंग पर बैठकर चीन देश के डाक्टर वाली कहानी में खोई हुई थी। तकिए से शोरबे की गंध उठ रही थी। तलत की उंगलियाँ झिझक के एहसास के साथ मखमली कपड़े को ऐंठ रहीं थीं।

पहले उन्हें चमड़े के भारी तलवे के नीचे काँच के किरचने की आवाज़ सुनाई दी और फिर पायदान पर पैर रगड़े जाने की आवाज़। रसोई की झाड़न से अम्मी ने ऊपरी होंठ का पसीना पोंछ लिया। पर्दा हटाकर अब्बा अंदर आए। चौखट पर परशियन में खुदा की तारीफ में कोई इबारत लिखी हुई थी, तलत ऐसा समझती थी। उसे परशियन ज़बान नहीं आती। अब्बा अपने काले कोट के नीचे एक बड़ा भूरे रंग का बंडल लिए हुए थे। आज अब्बा जामा मस्जिद गए थे। वहाँ से वह जरूर कुछ खरीदकर लाए होंगे। तलत ने उन्हें शर्बत का गिलास दिया। शर्बत में गुलाब की पत्तियाँ तैर रहीं थीं। अब्बा ने बच्ची को तिरस्कारपूर्ण गंभीरता से देखा। फिर जल्दी से शर्बत गटक गए लेकिन एक बूंद उनकी दाढ़ी के बालों में उलझ गई थी। तलत ने उन्हें तौलिया थमाया लेकिन अपनी दाढ़ी पोंछने की बजाय पलंग पर वे ऐन उसी जगह बैठ गए जहाँ गद्दे के नीचे तलत ने अपनी किताब छिपाकर रखी थी। किताब वहाँ सुरक्षित थी लेकिन उसे फिर भी उसे डर लगने लगा था ''ये परशियन है।'' कहते हुए लंबे नाखून वाली काली उंगली से अब्बा ने उस रहस्यमय बंडल की तरफ इशारा किया।

"खोलो, ये तोहफा तुम्हारे लिए है बच्चे!"

अम्मी आइने में से देख रहीं थीं। दादी अम्मा अपने घुटने पर रखकर टोपी बुन रही थी। तलत ने बंडल की रस्सी को खोलना शुरू किया तो दादी भी गर्दन घुमाकर उसी तरफ देखने लगी। लिफाफे के अंदर हाथ बढ़ाते ही तलत खुशी से झूम उठी। "वाह ये तो बिल्ले के बच्चे जैसा मुलायम है। "ये परशिया में बना है।" अब्बा ने दोहराया। उसके अब्बा "ईरान" कभी नहीं कहते। उसने रेशम का एक लम्बा काला कपड़ा बाहर खींचा। कपड़ा फिसल कर नीचे गिर गया। एक काली बिल्ली सलेटी फर्श पर पसरी हुई थी। दादी के बूढ़े हाथ कढ़ाई में तल्लीन थे। अम्मी बकरे के पाए पर पथरी नमक रगड़ रहीं थीं। उस काले लबादे को उठाकर खुशी और हैरानी से चहकते हुए तलत ने कहा, "क्या बात है! इससे बढ़िया बुर्का तो कोई और क्या ही होगा।" हाथों में लेकर बुर्के को निहारने लगी। चेहरे का नकाब बारीक जाल से गुंथा हुआ था। "देखो, तो जाली की कढ़ाई में फतेहपुर सीकरी की कशीदाकारी जैसा महीन काम हुआ है। अम्मी बकरे की छाती पर नमक रगड़ने लगीं। लेकिन उन्हें ये एहसास नहीं था कि शीशे की किरचें खुद उन पर भी रगड़ खा रही थीं। बुजुर्ग औरत काढ़े हुए फूलों पर नज़र गड़ाकर देखने लगीं।

सिर्फ उसके बाप की नज़रें गर्व और खुशी से चमक रही थीं। उन्हें दिखाने के लिए तलत ने बुर्का ओढ़ा और हँसने लगी। तलत हँसी। अम्मी अपना लंबा काला चाकू निकालकर उसके जंग खाए सिरे पर नमक रगड़ने लगीं। वो चांद सूरज जैसी अपनी खूबसूरत बच्ची को आईने में अँधेरा होते देख रहीं थीं। जल्दबाज़ी में गोश्त का वह हिस्सा काट बैठीं जो अभी गला नहीं था। जल्दबाजी में अम्मी ने अपना अँगूठा ज़ख्मी कर लिया था।

आइने में खुद का पर्दानशीन चेहरा देखकर तलत को घबराहट मालूम हुई। उसने अपनी अम्मी के चेहरे को देखा। पिंजरे के कव्वे दम तोड़ चुके

थे। अब्बा बोले, "मुझे धंधे पर जाना है।" और बाहर निकल गए। बुजुर्ग औरत को अचानक गुस्सा आ गया। टांकों के जाल में उलझ कर टोपी बिगड़ गई थी।

परशियाई बुर्का ओढ़े हुए तलत ने गद्दे के नीचे से किताब निकाली और दौड़ी।

लायब्रेरी बंद होने वाली थी। तलत इसीलिए तेज़ी से दौड़ रही थी। वालेकुम बाबा, वालेकुम बाजी। अब लायब्रेरी पहुँच कर अपनी किताब बदलेगी। अज़ीज़ा बाजी ने उससे एक बहुत ही मज़ेदार किताब देने का वायदा किया था। वालेकुम छोटी बहन। वह अपने परशियन लिबास को गंदी सड़क से छूते हुए दौड़ती चली जा रही थी। आज वो थोड़ी देर ठहर कर असद बाबा से भी बतियाएगी। लबादे को संभालते हुए सोचा। बाबा बिस्कुटों की थाली को भट्टी में सरका रहे थे। तलत मुस्कुराई, वालेकुम बाबा। उसे लगा जैसे बाबा की निगाहें शरारत कर रही हों। इस गफलत में बाबा थाली को भट्टी में ज्यादा अंदर सरका गए और अपना हाथ जला बैठे। आज लायब्रेरी वाली लड़की अब तक नहीं आई और उसकी जगह पर उन्हें बुर्के से ढकी हुई कोई औरत दिखाई दे रही थी। असद बाबा की बेकरी के ठीक ऊपर वाले हिस्से में अली और ज़हीर शतरंज खेल रहे थे। चालें चलने के दौरान नज़र उठाकर छोटी-सी खिड़की से नीचे गली में झांक लेते थे। आज अंधेरा घिर आया है लेकिन लायब्रेरी वाली लड़की नज़र ही नहीं आ रही। वो सोच रहे थे।

पर्दे के पीछे तलत को बहुत ठंडापन और घुटन महसूस हो रही थी। आज किसी ने भी उसकी तरफ नहीं देखा। और ना ही कोई मुस्कुराया। किसी ने रुककर उसके खूबसूरत परशियन बुर्के की तारीफ भी नहीं की। करीम बाबा अपनी घड़ियों की दुकान के बाहर खड़े थे। ताला बंद करके चाबी अपनी जेब में रख चुके थे। वो काफी देर से इंतज़ार कर रहे थे।

वो तलत को बताना चाहते थे कि आखिर कागज़ी डायल वाली घड़ी 175/- रुपयों में बिक गई थी। वो तलत को भी केसरी दुपट्टे या एक किताब खरीदने के लिए पैसे देना चाहते थे। कल तक तो बहुत देर हो चुकी होगी। उनकी बेगम कल तक सारी कमाई को उजाड़ चुकी होंगी। आज बच्ची लायब्रेरी क्यों नहीं आई? क्या कली खिलने से पहले ही मुरझाने लगी?

जब बुर्के के पीछे से तलत उनकी तरफ मुस्कुराई तो बाबा ने अपनी पीठ दूसरी तरफ मोड़ ली। आज न तो दबे पाँव आने वाली खुशी से सराबोर लड़की ही आई और न ही आज मतवाले कुत्ते ही दिखाई दिए।

पर्दे के पीछे अंधेरे ने तलत को जकड़ लिया था। उसके होंठ सिल गए थे। उसकी आँखें भिंच गईं थीं। उसकी आवाज़ बुर्के के अंदर क़ैद हो गई थी। आज उसकी हँसी से कुछ भी रोशन नहीं हुआ था। खाली चेहरे उसकी पथराई निगाह में राख बन चुके थे। वो चाहती थी... वो चाहती थी कि वो पर्दा हटा दे और कहे देखो... ''ये मैं हूँ। परशियन लबादे के भीतर ये मैं ही तो हूँ। मैं तो मज़ाक कर रही थी।'' लेकिन उस लबादे ने मानो उसके सारे वजूद को जकड़ लिया था।

तेज़, और तेज़। इससे पहले कि लायब्रेरी बंद हो और आँखें हमेशा के लिए बंद हो जाएं। दो मोड़ और पार करने के बाद वो वहाँ पहुँच जाएगी। आज उसे वही कमाल की किताब मिलेगी। लेकिन उस किताब में था क्या? अब तक वो ये भी भूल चुकी थी। एक और मोड़.... और तभी उसे अकड़े हुए लोहे के दरवाज़े के बंद होने की आवाज़ सुनाई दी। साथ ही अज़ीज़ा बाजी की कांच की चूड़ियों की आवाज़ भी। मोरपंखी रंगों वाली चूड़ियां? वो भागी, चिल्लाई ''खुदा के लिए मेरा इंतज़ार करो। अभी मत बंद करो लायब्रेरी। मुझे मेरी किताब दे दो।'' तलत काले लबादे को ज़मीन से घिसटते हुए दौड़ी जा रही थी।

आज लाल पर्दा नहीं था। आज चांदनी रात में उसे सलेटी धातु की बुझी-बुझी चमक दिख रही थी। अज़ीज़ा को बुर्का ओढ़े हाथ हिलाती और रोती हुई एक औरत दिखाई दी। साँझ ने जैसे खिंचे हुए खालीपन को खरोंच दिया, वो बहुत थक चुकी थी। अज़ीज़ा को बस पकड़नी थी। उसका घर यहाँ से बहुत दूर था।

काले पर्दे के अंदर तलत रोई, तलत चिल्लाई, लेकिन किसी ने उसे नहीं देखा, किसी ने उसे सुना भी नहीं। बहुत देर बाद जब अल्लाह के नाम ने शाम को रात में तब्दील कर दिया तब वो धीरे-धीरे घर की तरफ बढ़ने लगी। धीरे, बहुत धीरे।

आपकी प्रतिक्रिया के इन्तजार में —
शिवसिंह नयाल
'अलारिप्पु'
बी-6/62, पहली मंज़िल, सफदरजंग इन्कलेव,
नई दिल्ली - 110029. दूरभाष : 609327

मुद्रक : न्यू एज प्रिंटिंग प्रेस, नई दिल्ली :- 110055